कर्म दर्शन

अध्याय 1

कर्म– कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित भेद से पूर्णतः 9 प्रकार से– तीनों कालों में

कार्यक्षेत्र– प्राकृतिक, सामाजिक, बौद्धिक; अभीष्ट – सुख

कांक्षा सहित क्रिया ही कर्म, संचेतना सहित गति ही संपूर्ण क्रिया

वेदना– अस्वीकार्य के स्वीकार का दवाब

प्रत्येक कर्म में कर्ता, कारण, उद्देश्य, फल एवं प्रभाव ये 5 अंग समाहित

आवश्यकता पूर्ति हेतु ही संपर्क एवं संबंध

इच्छा, कर्म और फल का संतुलन ही अभीष्ट सिद्धि

बौद्धिक, सामूहिक/सामाजिक एवं प्राकृतिक उत्थान के लिए निश्चित दिशा के रूप में नियम तथा प्रक्रिया

कर्म– सुकर्म(योग, जागृति), दुष्कर्म(अपराध, प्रतिकार), मिश्रित(भोग, प्रतिकार)

अशेष कर्म फल सापेक्ष है; फल– मोक्ष, धर्म, काम, अर्थ; इच्छा के बिना कर्म नहीं

इच्छा– तीव्र, कारण, सूक्ष्म; तीव्र– क्रिया के रूप में अवतरित; कारण– अल्प संभाव्य, सूक्ष्म– अत्यल्प संभाव्य

साधन– अंतरंग(आशा, विचार, इच्छा, संकल्प, अनुभव प्रमाण), बहिरंग(तन, धन); अंतरंग समुच्चय= चैतन्य

अंतरंग साधन की क्षमता के अनुरूप बहिरंग साधन का नियंत्रण

जड़ और चैतन्य की एकसूत्रता, संतुलन व सामंजस्य को पा लेना ही अभीष्ट सिद्धि है।

साध्य के लिए साधक का समर्पण + साधन का नियोजन आवश्यक

साधन कार्य से निर्मित होने के साथ ही कर्म निर्माण के लिए साधन भी

प्रत्येक कर्म में अनुभूति और अनुमान क्रम उपलब्ध; संपूर्ण अर्थ का पूर्ण अर्थ अनुभव ही है

समस्त कर्म अर्थोपार्जन हेतु, प्रयोजन– अनुभव

अर्थ का उपार्जन, उपयोग, सदुपयोग और वितरण भी इच्छा की पूर्ति के लिए ही, इच्छा पूर्ति के मूल में अनुभव

दर्शन और ज्ञान ही अनुभव है; साधन द्वय का अनुभव के लिए प्रयुक्त होना ही प्रबुद्धता

मानव द्वारा प्रकट होने वाला ज्ञान– भौतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक(सह–अस्तित्व); इनका प्रत्यक्ष रूप = निपुणता, कुशलता, पांडित्य

पदार्थ विज्ञान और मनोविज्ञान सापेक्ष ज्ञान और अध्ययन; अध्यात्म/सत्ता निरपेक्ष/निश्चित ज्ञान

बहिरंग साधनों से पदार्थ विज्ञान की साधना, अंतरंग साधनों से बौद्धिक और अध्यात्म विज्ञान की साधना

अर्थ, सुकाम, धर्म और मोक्षगामी जागृति जीवन कार्यक्रम में सुख; अनर्थ, दुष्कर्म, अधर्म और बंधन की प्रक्रिया एवं जीवन में समस्या ही दुख व पीड़ा

अर्थ ही सुख, सुकर्म ही शांति, धर्म ही संतोष और मोक्ष ही परमानंद है।

परम अर्थ= अनुभव; अर्थ= मन, तन, धन; धर्म= सर्वतोमुखी समाधान; काम= संज्ञानीयतापूर्वक संवेदनाएँ नियंत्रित रहना, मोक्ष= भ्रम मुक्ति

इच्छा के 7 भेद– मोक्ष, धर्म, काम, अर्थ के लिए अर्थ; अर्थ के लिए काम, धर्म, मोक्ष– उत्तमोत्तम, मध्यमोत्तम, उत्तम, मध्यम, अधम–मध्यम, अधम, अधमाधम

तीन प्रकार की अन्वेषण प्रवृत्ति – सत्य, एषणा, विषय; प्रथम दो सिर्फ मानव में, तीसरा जीवों में भी

विषयोपभोग की 3 अवस्था– निमित्त, प्रमाद, प्रमत्त; अलिप्त, ग्रस्त, दग्ध

विषयों से अनासक्ति= विराग= विकारों से मुक्ति

ऐषणाओं से अनासक्ति= पर–वैराग्य= सद्व्ययता की स्वीकृति एवं निर्वाह

विषयान्वेषण स्वार्थ सीमा में, ऐषणान्वेषण परार्थ सीमा में, सत्यान्वेषण परमार्थ सीमा में क्रियाशील

स्वार्थपूर्ण व्यवहार– अधम एवं असामाजिक; परार्थपूर्ण व्यवहार– मध्यमोत्तम एवं सामाजिक; परमार्थपूर्ण व्यवहार– उत्तम, सामाजिक, स्वतंत्र(सर्वशुभ मानसिकता)

बुद्धिमूलक एवं रूचिमूलक योगों से सुकर्म–दुष्कर्म जन्य गतिविधियाँ

कासा, आकूति, मेधा– प्राप्त योगजन्य बुद्धि; मति, सुमति, अनुमति– सुकर्मजन्य बुद्धि; अमति, कुमति, दुर्मति– दुष्कर्मजन्य प्रवृत्ति

योगजन्य

कासा का प्रत्यक्ष रूप= कवि, कोविद्, कलाविद्

आकूति का प्रत्यक्ष रूप= दिव्यकर्मी(स्पष्ट अभ्युदयकारी), दिव्य प्रयोजनशील उपयोग(संयत भोग), दिव्य ज्ञानी (निर्भ्रांत)

मेधा का प्रत्यक्ष रूप= परिपूर्ण ज्ञान समेत मोक्ष

सुकर्मजन्य

मति का प्रत्यक्ष रूप= मान्य/सामाजिक कर्म, आचरण, कार्य–व्यवहार

सुमति का प्रत्यक्ष रूप= समाज के लिए आवश्यकीय कर्म, आचरण, कार्य–व्यवहार

अनुमति का प्रत्यक्ष रूप= अनुपम(अनुसरण योग्य) कर्म, आचरण, कार्य–व्यवहार

दुष्कर्मजन्य

अमति– अमान्य/असामाजिक कर्म, आचरण, कार्य–व्यवहार के रूप में

कुमति– कुत्सित/विशेष रूप से निषिद्ध असामाजिक कर्म, आचरण, कार्य–व्यवहार के रूप में

दुर्मति– दुष्ट/विशेष रूप से निषिद्ध असामाजिक कर्म, आचरण, कार्य–व्यवहार के रूप में

सुकर्म= सद्बुद्धि, सद्प्रवृत्ति, सुबोध, सद्विज्ञान, सामाजिकता और सत्संकल्प

विषयान्वेषी बुद्धि दुष्कर्म में, एषणान्वेषी बुद्धि सत्कर्म में, सत्यान्वेषी बुद्धि योग/जागृति में प्रसक्त, प्रयास और अभ्यासरत

मानव का सहज प्रवर्तन– वातावरण, अध्ययन और संस्कार के योगफल में प्रत्यक्ष

वातावरण– प्रकृति(शीत, ऊष्ण, वर्षामान जो खनिज एवं वनस्पति की राशि पर आधारित), मानवकृत(शिक्षा, व्यवस्था) भेद से

संस्कार– अन्वेषण–त्रय की सीमा में

प्राकृतिक संतुलन भी मानव सहज जागृति हेतु सहयोगी

प्रकृति का संतुलनाधार सत्ता, क्रिया का संतुलनाधार न्याय, विचार का संतुलनाधार समाधान, अनुभव का आधार सह–अस्तित्व रूपी परम सत्य; ये सभी पूर्ण

प्राकृतिक एवं मानव संतुलन का प्रधान कारण– मानव

भ्रमित मानव कर्म करते समय स्वतंत्र, फल भोगते समय परतंत्र

जागृत मानव कर्म करते समय स्वतंत्र, फल भोगते समय स्वतंत्र

जागृत अवस्था में समझकर करना; भ्रमित अवस्था में करके समझना

प्राकृतिक नियम – ऋतु संतुलन हेतु आवश्यकीय मात्रा में खनिज, वनस्पति को सुरक्षित रखते हुए उपयोग करना, उत्पादन प्रक्रिया में विघ्न उत्पन्न नहीं करना + सहायक होना; उत्पत्ति के अनुपात में व्यय

शिक्षा और व्यवस्था ही सामूहिक/सामाजिक संतुलन को बनाए रखने का एकमात्र उपाय

सामाजिक संतुलन – स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार

विचार संतुलन के मूल में 5 आवश्यकीय मूल प्रवृत्ति की सक्रियता; इनके मूल में विवशताएँ

सांस्कृतिक मूल्यों का अवगाहन और निर्वहन व मूल्यांकन ही मानवकृत वातावरण है।

सुसंस्कृति संपन्नता का प्रत्यक्ष रूप= मानवीयतापूर्ण स्वभाव

संस्कारपूर्णता का प्रत्यक्ष रूप = अति मानवीयतापूर्ण स्वभाव

मानवीयता के पोषण हेतु संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था; संस्कृति का पोषण सभ्यता, सभ्यता को पोषण विधि, विधि का पोषण व्यवस्था, व्यवस्था का पोषण संस्कृति

चित्रण व विचार ही क्रमशः कला और उपादेयता को प्रकट करता है।

मानव एक सामाजिक एवं न्यायिक इकाई है।

सामाजिकता= बौद्धिकता और भौतिकता का संयुक्त रूप

समृद्धि= न्याय सम्मत लाभ + हित

सत्य प्रतीति में ही संयत आचरण और व्यवहार में निष्ठा

योगजन्य बुद्धिपूर्ण जीवन= अतिमानवीयता

सुकर्मजन्य बुद्धिपूर्ण जीवन= मानवीयता

दुष्कर्मजन्य बुद्धिपूर्ण जीवन= अमानवीयता

विधि और व्यवस्था का आचरण ही सभ्यता और उस परंपरा का निर्वाह ही संस्कृति है।

संबंध में दायित्व प्रधान कर्तव्य; संपर्क में कर्तव्य प्रधान दायित्व

सद्शास्त्र सेवन, मनन और आचरण से व्यक्ति, परिवार में शांति और स्थिरता

मानव के चार प्रकार– पुण्यात्मा, पापात्मा, सुखी, दुखी

कार्यक्रम ही कर्म; कर्म–मात्र ह्रास/विकास और जागृति के लिए सहायक

मानव में रूप, बल, बुद्धि, पद, धन, कर्म, उपासना, आवश्यकता, अवसर और अवकाश समीचीन

तन, मन, धन रूपी साधन ही अवकाश; अवकाश(संभावना) से अधिक आवश्यकताओं को अपनाने से ही दुष्प्रवृत्तियाँ क्रियाशील

विधि के आधार– सत्य, कर्म, विषय

सत्य– वर्ग व राज्य विहीन जीवन, मानवीयता और अतिमानवीयता की सीमा में सफल

कर्म– स्व–पर लाभालाभ; वर्ग भावना

विषय– स्व–पर हानि, समुदाय

विवेकपूर्ण विचार, उपासना इच्छा सहित किया गया प्रत्येक कर्म सभी स्तर पर श्रेयस्कर

कर्म= स्वार्थ, परार्थ, परमार्थ के लक्ष्य भेद से

स्वार्थ	स्वार्थ–परार्थ	परार्थ	परार्थ–परमार्थ	परमार्थ	परमार्थ–परार्थ
विषम	विषम–सम	सम	सम–मध्यस्थ	मध्यस्थ	

मध्यस्थ बुद्धि योग में, सम बुद्धि सत्कर्म में, विषम बुद्धि दुष्कर्म में प्रसक्त एवं प्रवृत्त

उर्ध्वभावपूर्ण परिवार, सम–मध्यस्थ संयोगपूर्ण समाज और मध्यस्थ–सम योगपूर्ण व्यवस्थातंत्र एवं व्यवहार ही सर्वमंगल कार्यक्रम

यथार्थ–ज्ञान क्षमता का प्रत्यक्ष रूप ही मानवीयतापूर्ण आचरण

व्यवहार के लिए विवेक और विज्ञान, उत्पादन के लिए विज्ञानपूर्ण ज्ञान अनिवार्य है।

समझने की क्षमता= व्यंजनीयता, मूल व्यंजनीयता= सत्ता में संपृक्तता; संपृक्तता की अनुभूति ही पूर्ण व्यंजनीयता, व्यंजनीय क्षमता में गुणात्मक परिमार्जन ही संस्कार; दर्शक ही व्यंजनीय क्षमता से प्रतिष्ठित; प्रत्येक इकाई अपनी जागृति के अनुरूप दर्शक

प्रकृति= दृश्य

जीवन के आद्यांत कार्यक्रम और आचार– सत्याचार(उत्तम), लोकाचार(मध्यम), विषयाचार(अधम)

शरीर द्वारा किये जाने वाले संपूर्ण क्रियाकलाप के मूल में विचार; यही चैतन्य

वैचारिक क्षमता/संस्कार में परिमार्जन हेतु सत्मार्ग और योगाभ्यास; यही नियम–त्रय के पालन, अनुसरण एवं अनुशीलन पूर्वक सफल

योगाभ्यास– मिलन का अभ्यास; मिलन के अनंतर स्वीकृति– जीवन जागृति के रूप में; विकृति– अमानवीयता के रूप में

आचरण का स्तर 7 प्रकार से– प्राण, जीव, काम, लाभ/समृद्धि, कला, प्रदर्शन/बोध, सहज

अमानवीयता, मानवीयता, दिव्यमानवीयता

प्रत्येक आविष्कार और अनुसंधान व्यक्तिमूलक उद्घाटन; यह शिक्षा एवं प्रचारपूर्वक सर्वसुलभ; यही सर्व सामान्यीकरण प्रक्रिया

अस्तित्व का प्रकटन ही आविष्कार; आविष्कार की सामान्यीकरण प्रक्रिया ही शिक्षा

पतनोन्मुखी जीवन की श्रृंखला में अपराध के 3 कारण– अभाव, अत्याशा, अज्ञान; फलस्वरुप

राग, द्वेष, असत्य, अभिमान, भय, आलस्य, रोग, असफलता

इनका निराकरण क्रम से अभाव को उत्पादन व अभ्यास से; अत्याशा को विवेक से; अज्ञान को ज्ञान से; राग को विराग से; द्वेष को स्नेह से; असत्य को सत्य से; अभिमान को सरलता से; भय को अभय से; आलस्य को चेष्टा से; असफलता को पराक्रम एवं पुनः प्रयास से; रोग को औषधि, आहार व विहार से

संबंध और संपर्क की सीमा पर्यंत व्यवहार; मूल्यविहीन संपर्क और संबंध नहीं

दृष्टिगोचर के आधार पर ही प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम क्रिया का वर्गीकरण और निर्धारण

सांनिध्य की निरंतरता का अनुभव= प्रत्यक्ष

सांनिध्य की निरंतरता की संभावना= अनुमान

सांनिध्य की संभावना के अतिरिक्त अस्तित्व= आगम

प्रकृति की अनंतता में सता में पूर्णता ही अनुमानातीत अस्तित्व का प्रमाण

प्रत्यक्ष क्रियाएँ– स्थूल, सूक्ष्म और कारण भेद से

सामान्य बुद्धि से स्थूल, विशेष बुद्धि से सूक्ष्म, विशिष्ट बुद्धि से कारण प्रत्यक्षीकरण प्रसिद्ध

स्थूल= रूप, गुण; सूक्ष्म= गुण, स्वभाव; कारण= स्वभाव, धर्म

व्यवहार उत्पादन कर्म में 3 स्तर में प्रवृत्तियाँ– स्वतंत्र(विशेषज्ञ), अनुकरण(विशेषज्ञ होने के लिए इच्छुक), अनुसरण(अनुशीलन पूर्वक कर्म और व्यवहार; विशेषज्ञता के प्रति इच्छा जागृत नहीं)

स्वतंत्र– स्थूल, सूक्ष्म और कारण की सान्निध्यानुभूति क्षमता से; नियंत्रण क्षमता समाहित

अनुकरण– स्थूल और सूक्ष्म की सांनिध्यानुभूति क्षमता से; स्वेच्छा से नियंत्रित होने की क्षमता

अनुसरण– स्थूल क्रिया की अनुभूति क्षमता से; अनुशासित होने की क्षमता

सार्वभौमिक कामनानुरूप कार्यक्रम में रत होने से ही सभी स्थितियों में दोष दूर होते हैं; यही मांगल्यप्रद

समस्त कर्मों से सत्य में प्रतिष्ठा, धर्म में आरूढ़ता, न्याय में निरंतरता, वस्तु की उपयोगिता का अनुभव करने की कामना और प्रयास

भौतिक द्रव्यों का नियंत्रण, उपार्जन, उपभोग और सदुपयोग; सामाजिक मूल्यों का वहन–निर्वहन, आचरण और निरंतरता, सत्यता–सत्य का बोध और अनुभव ही प्रतिष्ठाएँ हैं।

अनुभूति आनंद ही नित्य प्रतिष्ठा; धर्म और न्याय सम्मत आचरण, व्यवहार, व्यवस्था, विधि और शिक्षा ही समाधान और अमर प्रतिष्ठा; विषय प्रवृत्ति ही अल्प प्रतिष्ठा

क्रिया, कर्म, पदार्थ, प्रक्रिया, फल और शक्तियाँ परस्पर पूरक

श्रम, गति और परिणामशीलता क्रिया की, उसका परावर्तन कर्म की, अर्थवत्ता पद की, विकासशीलता प्रक्रिया की, उपयोगिता फल की, तरंग दवाब व प्रभाव शक्तिवत्ता की स्थितिवत्ता को स्पष्ट करता है; ये सभी पदार्थ की सीमा में पाए जानेवाले परावर्तन या परिवर्तन प्रकटन हैं।

सापेक्ष रूप में जड़ शक्तियाँ, अपेक्षा रूप में चैतन्य शक्तियाँ स्थितिशील, निरपेक्ष रूप में अध्यात्म सत्ता स्थितिपूर्ण

जड़ शक्तियाँ– ताप, प्रकाश, विद्युत, आकर्षण, ध्वनि

चैतन्य शक्तियाँ– आशा, विचार, इच्छा, संकल्प, अनुभूति

मध्यस्थ क्रिया व सत्ता में बोध एवं अनुभूति; मध्यस्थ क्रिया ही आत्मा व सत्ता ही मध्यस्थ

जड़ शक्तियाँ प्रधानतः गतिशील, चैतन्य शक्तियाँ प्रधानतः संचेतनशील

अभाव, भाव व तिरोभाव की स्वीकार क्षमता ही संवेदना; अभाव में वेदना, भाव में संवेदना व तिरोभाव में संबोधना= सम्यक बोध= अनुभव का पूर्व लक्षण

अभाव के भाव हेतु प्रयोग एवं उत्पादन; भावपूर्णता हेतु आचरण एवं व्यवहार; भाव के तिरोभाव हेतु अभ्यास; प्रत्येक अर्थ का पूर्ण अर्थ अनुभव ही है।

निर्णायक क्षमता कारण, गुण, गणित के रूप में; विवेचना क्षमता विवेक को स्पष्ट करने की प्रबुद्धता के रूप में प्रत्यक्ष

आशा से संपन्न मन, विचार से संपन्न वृत्ति का अनुभव करता है। विचार से संपन्न वृत्ति, आशा से संपन्न मन का दर्शन करता है।

अनुभवपूर्ण आत्मा संकल्प संपन्न बुद्धि का दर्शन करती है।

अधिक जागृत, कम जागृत का दर्शन; कम जागृत अधिक जागृत को पहचानता है।

स्थूल जीवन सुख, शांति, की अपेक्षा में; सूक्ष्म जीवन शांति, संतोष की अपेक्षा में; कारण जीवन आनंद, परमानंद की प्रतीक्षा में

यही भौतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक उपलब्धियाँ, जो मानवीयता और अतिमानवीयता पूर्ण कार्यक्रम पूर्वक सफल

जागृतिपूर्णता में ही संबोधन क्षमता प्रकट, विभववत्ता की प्रतिष्ठा

हर कर्म फलवती

विभव में प्रयुक्त गुण– मध्यस्थ(परमार्थ कर्म), सत्वगुण, निर्भ्रांत अवस्था; आचरण, व्यवहार के साथ दया, आदर, प्रेम जैसे मूल्यों सहित विवेक, विज्ञान क्षमतापूर्ण

प्रलय में प्रयुक्त गुण– विषम(स्वार्थ कर्म), तमोगुण, भ्रांत अवस्था; ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान एवं अहंकार सहित विज्ञान क्षमता का अपव्यय

उद्भव में प्रयुक्त गुण– सम(परार्थ कर्म), रजोगुण, भ्रांताभ्रांत अवस्था; धैर्य,साहस, सुशीलता सहित विज्ञान का प्रयोग

स्वस्थ सामाजिकता= स्थापित मूल्यों का वहन

व्यवहार त्रय(कायिक, वाचिक, मानसिक व्यवहार) नियम का पालन= सच्चरित्रता

समस्त परिणाम, परिमार्जन एवं परिवर्तन 5 प्रकार से द्रष्टव्य– सह–अस्तित्व, विकासक्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति

संस्कारों में गुणात्मक उदय का प्रत्यक्ष रूप= नियम त्रय का पालन

संयत भोग प्रवृत्ति= सार्वभौम व्यवस्था सहज प्रमाण

भोग परिणाम की सीमा में पशु, राक्षस मानव; विचार परिणाम की सीमा में मानव, देव मानव; दिव्य मानव गंतव्य स्थिति, निरंतरता भावी

प्रमाण के पूर्व अनुमान ज्ञातव्य

विज्ञान का उर्ध्व(दूरसंचार) व अधोमुखी(सामरिक तंत्र) प्रयोग; विवेक का केवल उर्ध्वमुखी प्रयोग

विज्ञान का नियंत्रण विवेक से; उर्ध्वमुखी विज्ञान शुद्ध रजोगुण तथा सत्वगुणपूर्वक विभव कार्य में प्रसक्त

विकास की ओर प्रगति में उत्साह, प्रसन्नता तथा हर्ष का अनुभव

ह्रास की ओर गति से खिन्नता, निरूत्साह, विवशता और क्लेश

प्रत्येक सामाजिक मूल्य का निर्वाह विश्वासपूर्वक ही सफल हुआ है।

न्यायपूर्ण व्यवहार, समाधान पूर्ण विचार और सत्यानुभूतिपूर्ण जीवन में क्लेशों का अत्याभाव= सर्वमंगल

विवेक और विज्ञान संपन्न कर्म परंपरा ही लोकमंगल कर्म है। यही मानव की चिर आशा , आकांक्षा, आवश्यकता और अवसर

विवेकानुगामी विज्ञान के प्रयोग से ही मानव की प्रत्येक अवस्था का जीवन सर्वांग सुंदर है– यही सर्वमानव कल्याणकारी कर्म, प्रवृत्ति और उपलब्धि

मानव कुल के साथ स्नेह करने की क्षमता ही विश्वास और संतोष की निरंतरता; यही अग्रिम विकास हेतु उत्साह और प्रवर्तन

मानवीयता पूर्ण मानव में दया, सरलता, त्याग, तप, परोपकार, सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और गौरव जैसी मूल्यवत्ता आचरित; यही स्व–पर मांगलिक

अध्याय 2

उपासना= उपायपूर्वक सहवास पाना, जिसके लिए परिश्रम(परिमार्जित श्रम) और अभ्यास

मूल प्रवृत्तियों का परिमार्जन और परिवर्तन प्रक्रिया; संस्कार और स्वभाव परिवर्तन

अनुसंधान– भौतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक भेद से

उपासनाएँ – कूटस्थ(पूर्ण अनुभव हेतु), रूपस्थ(महिमा सहित रूप सानिध्य हेतु), आत्मस्थ (प्रत्यावर्तन प्रक्रिया)

चैतन्य= सूक्ष्म+कारण क्रिया= आत्मपुंज= देवी–देवता

स्थूल क्रिया प्राण से, सूक्ष्म क्रिया चित्त से, कारण क्रिया आत्मा से नियंत्रित

सूक्ष्म और कारण का वियोग नहीं, यही अमरत्व का साक्षी

देवता– द्यौ(असीम अवकाश), अंतरिक्ष(एक ब्रह्मांड) और भू(एक भूमि का वातावरण) स्थलीय

दिव्यात्मा देवात्मा भूतात्मा

दिव्यात्म–ा आचरणपूर्णता/पूर्ण जागृति संपन्नता; दिव्य मानव; अध्यात्म में; अनुभवमूलक विचार, व्यवहार और व्यवसाय; संयत और नियंत्रित; भ्रम–मुक्ति; सजगता, सतर्कतापूर्ण; निर्भ्रांत; निष्ठा; विद्या; भ्रम–मुक्ति सहित बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि हेतु; उपलब्धि(फल)– विवेकपूर्ण विज्ञान, तप, निश्चय, निर्णय, संकल्प क्षमता

देवात्मा– क्रियापूर्णता संपन्न सतर्कता सहित; मानव, देवमानव; अधिदैविक तत्वों में; व्यवहार प्रधान उत्पादन; व्यवस्थित और अनुशासित; ऐषणात्रय; जागृति, सतर्कतापूर्ण; भ्रांताभ्रांत; उपासना; उपविद्या; बौद्धिक समाधान और भौतिक समृद्धि हेतु; उपलब्धि(फल)– अर्धविवेक, विज्ञान, धैर्य, साहस, स्नेह, विश्वास, त्याग तथा जीवन क्रियाकलाप में नियंत्रण, संयम

भूतात्मा– विषयों में तीव्र आसक्ति और सशंकता सहित; पशु, राक्षस मानव; अधिभौतिक तत्वों में; उत्पादन प्रधान व्यवहार; अनानुशासित और अव्यवस्थित; विषय–चतुष्टय; अजागृति, सशंकता सहित; भ्रांत; आसक्ति; क्षुद्रविद्या; भौतिकता हेतु; उपलब्धि(फल)– अविवेकपूर्ण विज्ञान, अधैर्य, दुस्साहस, राग, द्वेष, सशंकता अनियंत्रित जीवन क्रियाकलाप

उपासना में शिष्टता 2 प्रकार से– शाकाहार+दुग्धपान; मांसाहार+मद्यपान

दूध– ममता सहित प्रादुर्भूत, पुष्टि प्रदायी, पोषक, स्निग्ध, त्राणद, प्राणद, हृदय और मेधस का संतुलनकारी रस द्रव्य, संवेदनशीलता का वृद्धिकारी

मद्य– विकारपूत प्रक्रिया सहित आसवीकृत द्रव्य, औषधीय प्रयोग, पेय के रूप में प्राणशोषक, पुष्टिहर, असंतुलनकारी, उत्तेजनात्मक, आवेशपूर्ण गति प्रदायी

मांस शरीर– अंडज, पिंडज मेधससहित रचना जो चैतन्य इकाई के संस्कार परिवर्तन, परिमार्जन का साधन; आस्वादन और स्वागत क्रिया का माध्यम

शाकबिम्ब– उद्भिज, मेधसविहीन रचना; औषधि एवं आहार रूप में जीवावस्था और मानव के लिए उपयोगी

उपासना में सार्वभौमिक मूल्यों का अवगाहन करना ही प्रधान उपादेयता

समस्त उपासनाओं के मूल में लक्ष्य साम्यता– अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था– सर्वमंगल

मानव में शक्तियाँ– क्रिया, इच्छा, ज्ञान

जागृति क्रम प्रक्रिया प्रगति में पीड़ा नहीं

बौद्धिक, व्यावहारिक और भौतिक पीड़ाएँ जो क्रम से समस्या, अपराध, अक्षमता और अपव्यय के रूप में द्रष्टव्य

क्रिया शक्ति का जागरण= 5 इंद्रियों द्वारा शक्तियों का सदव्यय

इच्छा शक्ति का जागरण= आशा, विचार, इच्छा, संकल्प का सदव्यय

ज्ञान शक्ति का जागरण= सम्यक बोध और अनुभूतिपूर्णता= पूर्ण जागरण

जीवन जागृति का प्रत्यक्ष स्वरूप= विवेकपूर्ण विज्ञान का प्रयोग= सतर्कता, अखण्ड सामाजिकता, प्रबुद्धता, निर्विषमता, सह–अस्तित्व, शिक्षा, विधि, व्यवस्था, सभ्यता, संस्कृति, बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि, जीवन जागृति की निरंतरता

श्रेष्ठ उपासना की उपलब्धि= मूल प्रवृत्तियों का परिमार्जन, विशिष्ट और शिष्ट मानसिकता, विचार चिंतन–बोध क्षमता, अनुभवपूर्णता

क्रिया की पूर्णता= क्रिया की निरंतरता; अतः उदासीनता या दूसरे को उदासीन करने का कारण सिद्ध नहीं

समान के साथ व्यवहार, कम जागृत प्रकृति के साथ उत्पादन, अधिक जागृति के लिए अभ्यास करने के लिए प्रेरणा= वास्तविक अभ्यास

उपासना का प्रत्यक्ष फल = विवेक, मानव लक्ष्य, वैराग्य/समृद्धि

वैराग्य का परावर्तन= असंग्रह/समृद्धि, उदारता, दया

विवेक और वैराग्य ही परोक्ष/सद्व्यवहारिक ज्ञान का प्रधान लक्षण

अनुभव ही परोक्ष ज्ञान का अंतिम उपलब्धि; सत्य–त्रय में ही अनुभव

मानव का स्वधर्म= सुख= न्यायपूर्ण आचरण= मानवीयतापूर्ण सीमा में नियमत्रय का पालन

पदार्थ में रूप मर्यादा, प्राण में गुण मर्यादा, जीव में स्वभाव मर्यादा, मानव में धर्म मर्यादा; मर्यादा का प्रत्यक्ष रूप= विश्वास; संबंध और संपर्क में विश्वासपूर्वक ही सुख

स्वधर्म संपन्नता और निर्वहन परिपूर्णता तक ज्ञानार्जन के अर्थ में अध्ययन रूपी उपासना

साधन, साधक और साध्य की एकसूत्रता ही उपासना की सफलता; प्राप्त शक्ति/साधन का सदुपयोग ही अग्रिम जागृति में सहयोगी

इन्द्रिय कार्यकलाप और कार्यक्षेत्र ही अपरोक्ष ज्ञान की सीमा= 4 विषय सीमांतवर्ती सिद्धियाँ

सत्यबोध सहित सत्य बोलने से भय और अविश्वास की निवृत्ति; हर्ष, उत्साह का उदय

अहिंसा पर अधिकार पा लेने से विरोध से भय मुक्ति; स्नेह, उदारता का उदय

अपरिग्रह में निष्ठा से दयहीनता, हीनता का नाश; धैर्य धृति का उदय

अस्तेय(चोरी न करना) प्रतिष्ठा से धूर्तता, विकलता का नाश; तुष्टि, संतोष का उदय

विश्व के प्रति मूल्य भाव की प्रतिष्ठा से इष्ट और साधक के मध्य विषमता का अभाव; तत देवता का स्वभाव प्रवेश

अधिक जागृत में समर्पण से अभिमान और अहंकार का उन्मूलन; विद्या, सरलता का उदय

स्व–शरीर मोह नष्ट होने से संसार के प्रति मोह दूर

सर्वशुभ रूपी आप्तकामनापूर्ण बुद्धि से विश्व की आधारभूत सत्ता में ज्ञान, अनुभव

शरीर संवेदना संयत रहने से मन की पवित्रता, मन की पवित्रता से मनोबल का लाभ

मंत्र(सार्थक शब्द) के अर्थ का तद्रूपता पूर्वक स्मरण करने के अभ्यास से उसका अर्थ और स्वभाव गम्य

कृतज्ञता ही संयमता का आद्यान्त आधार; शैशव और किशोरावस्था में ही कृतज्ञता का रोपण आवश्यक

दयापूर्ण विचार निरंतरता से कार्पण्य दोष का निवारण; परम आह्लाद का अनुभव

जिस लक्ष्य में अंतःकरण(मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि) को तदाकार करें, उसी में वह प्रखर होता है।

जल में तदाकार होने से संताप का नाश और तृप्ति का अनुभव

अग्नि में तदाकार होने से रोगों का नाश और आरोग्य का लाभ

वायु में तदाकार होने से अस्थिरता का नाश और स्थिरता का लाभ

प्रकाश में तदाकार होने से अज्ञान का नाश और ज्ञान का लाभ

पर–हित चिंतन से उत्साह, आह्लाद की वृद्धि

परोपकार से यश; समस्याओं को सुलझाने से गौरव

सबके कल्याण चिंतन से प्रतिभा का विकास

पर गुण गणना अभ्यास से स्वदुर्गुणों का नाश

उपासना के लिए वातावरण का महत्व अपरिहार्य, जिसमें मानवकृत वातावरण(शिक्षा और व्यवस्था के रूप में) ही प्रधान

एक व्यक्ति जो उपासनापूर्वक प्रबुद्ध, वह शिक्षा और व्यवस्थापूर्वक सामान्य

व्यक्तित्व= मानवीयता की सीमा में व्यवहार, नियमत्रय का आचरण

प्रतीक उपासना भी सत्यता को इंगित कराने का उपाय; प्रतीकता में अनेकता है ही

प्रतीक लक्ष्यवादी उपासना क्रम अपूर्णता की सीमा तक गौण और असामाजिक

ऐसे प्रतीक स्थान, जाति, भाषा, कला, चित्र, रचना, प्रतिमा, स्मारक और शब्दों के भेद से गण्य

सत्य ही लक्ष्य; सत्य, सत्यता में वैविध्यता नहीं

बौद्धिकता ही मानव के व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष रूप

मानव के लिए सहज समर्थ उपासना एक अनिवार्य कार्यक्रम

सह–अस्तित्व में अनुक्षण–विक्षण वृत्ति(क्षण–क्षण मध्यस्थ व्यवधान का तिरोभाव) से सहजावृत्ति

सहजावृत्ति– प्रत्येक क्षण में लगातार सह–अस्तित्व चिंतन, विचार क्रम में प्रामाणिकता का सहज प्रमाण

सत्ता में संपृक्त प्रकृति का ज्ञान/पूर्ण दर्शन ही सहज प्रतिष्ठा, अवस्था

काल= क्रिया की अवधि

आरोपित विचार, इच्छा ही असहज और निरारोपित विचार, इच्छा ही सहज

आरोपण– जो जैसा है, उससे अधिक, कम, अन्यथा समझना

क्रियाएँ रूप और शब्द भेद से

पूर्णता पर्यंत इकाई पूरकता, उपयोगिता के लिए प्रवृत्त

मध्यस्थ क्रिया ही द्रष्टा; मध्यस्थ क्रिया का चरमोत्कर्ष ही क्षण–क्षण मध्यस्थ व्यवधान से मुक्ति

आत्मा के आनुषंगिक बौद्धिक प्रक्रिया और व्यवस्था में सत्य–संकल्प एवं सत्य कल्पनापूर्ण मानसिकता की स्थिति पाई जाती है, जो प्रसिद्ध कर्म उपासना ज्ञानपूर्ण है= पूर्ण जागृति

श्रेय जिज्ञासु होने पर ही लुप्त–सुप्त कल्पनाएँ परिमार्जित

श्रेय जिज्ञासा का उदय स्व–संस्कार, विधि विहित अध्ययन तथा उसके अनुकूल वातावरण में; विधि विहित अध्ययन– निपुणता, कुशलता, पांडित्य

आत्मबोध ही सत्य जिज्ञासा का प्रधान लक्षण है।

अनुभव की अवधारणा सत्य बोध के रूप में, अवधारणा(सत्य बोध) ही सत्य–संकल्प; यही परावर्तित होकर शुभकर्म, उपासना, आचरण; इसी का परिवर्तित मूल्य ही धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा

स्वमूल्य ही प्रवृत्ति और निवृत्ति का स्तुषि

शब्द में जो भाव(मूल्य) है, वही उसका अर्थ; सार्थक शब्द का अर्थ ही जागृति की ओर गति

शब्द का अर्थ अस्तित्व में वस्तु

शब्द का मूल रूप मन; मेधस पर मन आस्वादन और स्वागत भावपूर्ण तरंगों का प्रसारण, संचालन, नियंत्रण करता है; इसके मूल में शब्द

क्रिया शक्ति कासा, इच्छा शक्ति आकूति तथा ज्ञानशक्ति मेधा नामक दिव्य बुद्धियाँ प्रत्यक्ष है, जिनके उदय से ही मनोबल, बुद्धिबल तथा आत्मबल प्रमाणित होता है।

शक्तित्रय जागरण के बिना त्याग/भ्रममुक्ति और प्रेम प्रमाणित नहीं

शरीरमय जीवन के लिए मनुष्येतर प्राणी की सृष्टि

मनोमय, बुद्धिमय, आत्ममय जीवन के लिए मानव की सृष्टि

स्वपर कल्याणकारी कर्म, उपासना और ज्ञान के बिना शांतिपूर्ण नहीं

विरागमय जीवन में अभाव का अभाव; विराग ही आत्म—लक्ष्य कारक

आत्मलक्ष्य के प्रभाव से आत्मबोध, आत्मबोध होने से आत्म दीपन— आत्म विश्वास— अज्ञान का क्षय— आत्म प्रतिष्ठा— पर—वैराग्य— साम्रज्य सिद्धि— परम ऐश्वर्य, पूर्ण तृप्ति; ऐश्वर्य प्राप्ति से सहजावृत्ति; सहजावृत्ति से भ्रम मुक्ति का अनुभव; भ्रम मुक्ति का अनुभव ही मानव के लिए चरम पुरूषार्थ; यही पूर्ण जागृति और द्रष्टा पद प्रतिष्ठा

अध्याय 3

1.परमाणु संरचना और अणु रचना

प्रत्येक परमाणु अंश व्यापक में संपृक्त होने के आधार पर ऊर्जा संपन्न; ऊर्जा संपन्नता वश ही बल संपन्नता और चुम्बकीय बल संपन्नता होना समझ में आता है।

बल संपन्नता वश ही परस्परता को पहचानने ओर व्यवस्था में भागेदारी करने की प्रवृत्ति; व्यवस्था का कार्यरूप.निश्चित आचरण; पहचानने के आधार पर ही गठन संगठन होना; गठन–संगठन का व्यवस्था के अर्थ में प्रमाणित होना

सह–अस्तित्व ही मूल–सूत्र व व्यवस्था का आधार; हर परमाणु स्वचालित और निश्चित आचरण की अभिव्यक्ति; परमाणु में कार्यरत अंशों के संख्या भेद होने से आचरण भेद

मानवीयतापूर्ण आचरण (मूल्य, चरित्र, नैतिकता) का संयुक्त अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन मानव परंपरा में, से, के लिए व्यवस्था का आधार

परमाणु संरचना की महिमा आचरण में स्पष्ट; हर आचरण अपने में क्रिया के रूप में

परमाणु अंश असीम अवकाश में घूर्णन करता हुआ, दूसरे अंश की तलाश में; परमाणु के मध्य में परिवेश के बराबर/अधिक अंश होना; चार से कम परिवेश होने पर बढ़ने और चार से अधिक होने पर घटने की संभावना

मध्यांश की संख्या के आधार पर भार निर्भर; भार वश ही परमाणुएँ एक दूसरे को पहचानते हुए एकत्रित; फलस्वरूप अणु ठोस, तरल और विरल रूप में

तरल वस्तु ही रसायन संसार की आरंभिक वस्तु

शेष प्रकृति के साथ सहज कार्य व्यवस्था को पहचानते हेतु इनका अध्ययन आवश्यक

प्रत्येक परमाणु और अणु अपने प्रजाति एक सीढ़ी होना(यथास्थिति और उसकी निरंतरता)

विविध आवश्यकीय प्रजाति के परमाणु, अणु से संपन्न होने के उपरांत ही यौगिक प्रवृत्ति, प्रक्रिया

अंशों की संख्या बदलने (प्रस्थापन–विस्थापन) के फलस्वरूप ही परिणाम

स्वभाव गति प्रतिष्ठा में ही हर परमाणु, अणु, अणु रचनाएँ निश्चित आचरण को संपन्न करता हुआ स्पष्ट; निश्चित आचरण ही व्यवस्था का प्रमाण

2. विकास–क्रम, विकास

पानी और धरती के संयोग से अम्ल, क्षार; ब्रह्मांडीय ऊष्मा के संयोजन से, प्रतिबिम्बन प्रभाव से पुष्टि तत्व, रचना तत्व के रूप में द्रव्य रचनाएँ होना पानी में पाया जाता है। इसका मूल रूप काई

रासायनिक द्रव्यों का उत्सव= ऊर्मि

हर प्राणाकोषा में प्राण सूत्र; इसी में रचना तत्व और पुष्टि तत्व निश्चित मात्रा में + रचना विधि निहित; रासायनिक द्रव्यों की उपलब्धि और निश्चित ऊष्मापूर्वक इनमें विपुलीकरण

वनस्पति संसार में रस संचय पत्ती और जड़ के क्रियाकलाप से

वर्तमान में पाई जानेवाली विविध रचनाएँ, रचना में विकासक्रम की गवाही

प्रकृति 4 अवस्थाओं के रूप में– पदार्थ, प्राण, जीव, ज्ञान

मानव शरीर रचना= सप्त धातु संतुलन+समृद्ध मेधस

जीवन– गठनपूर्ण परमाणु; जीवन ही शरीर को जीवंत बनाए रखते हुए समझदारी को प्रमाणित करना

पदार्थ– वनस्पति– स्वेदज संसार– अंडज– पिंडज– मानव शरीर

3. परमाणु में विकास

विकासक्रम– पदार्थ अवस्था, प्राण अवस्था; हर रचना के मूल में परमाणु; विकास– गठनपूर्णता

परमाणु– भूखे, अजीर्ण

अजीर्ण परमाणु द्वारा अपने गठन में समाहित कुछ अंशों को बहिर्गत करने का प्रयास; मध्यांश की ओर ताप का अंतर्नियोजन; इसी क्रम में विद्युत; इन दोनों प्रक्रिया के फलस्वरूप विकिरणीयता

जीवन एक गठनपूर्ण परमाणु; अक्षय बल, शक्ति संपन्न; मानव ही अस्तित्व और स्वयं का अध्ययन करने वाला;मानव में ही जागृति को प्रमाणित करने की व्यवस्था

क्रिया– भौतिक, रासायनिक, जीवन; गठनशीलता विधि से भार बंधन, अणु बंधन; परमाणु ही गठनशील पद में जड़ और गठनपूर्ण पद में चैतन्य

'है' का अध्ययन; अध्ययन= अनुभव के प्रकाश में शब्दों का स्मरणपूर्वक अर्थों से इंगित वस्तुओं का अस्तित्व में पहचान होना; अर्थ से इंगित वस्तुएँ अस्तित्व में सुस्पष्ट होना ही जागृति

जागृति का प्रमाण= न्याय, समाधान, यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता पूर्वक प्रमाणित होना; प्रमाणित होना = परंपरा में होना

उपयोगी, सदुपयोगी, प्रयोजनशील प्रमाणित किया हुआ शोध, अनुसंधान का शिक्षा, अध्ययन, अभ्यासपूर्वक लोकव्यापीकरण; वर्तमान में मनाकार को साकार करने संबंधी प्रयोग लोकव्यापीकृत; मनःस्वस्थता संबंधित प्रयोग लोकव्यापीकृत नहीं

जीवन जागृति ही मनःस्वस्थता का प्रमाण

अनुभवमूलक विधि से अनुभव का बोध बुद्धि में, चिंतन चित्त में, न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक तुलन वृत्ति में और मूल्यों का आस्वादन मन में

संबंधों को पहचानने के अनंतर मूल्यों का निर्वाह; संबंध के साथ मूल्य, मूल्य के साथ वस्तुओं का अर्पण–समर्पण; अर्पण–समर्पण के साथ उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनशीलता वैभवित

जागृति= जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना

शेष प्रकृति त्व सहित व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में आचरण प्रमाणित

परमाणु में विकास की तीन चरण– गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता

4. मनःस्वस्थता का स्वरूप

मानव भौतिक क्रियाकलाप पर विश्वास कर पा रहा है, किंतु मानव पर नहीं

समाधान ही अनुभव में सुख, सुख का प्रमाण व्यवहार में समाधान; समाधान जीवन क्रिया/मनःस्वस्थता/जीवन जागृति का अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन

मानव जीवन क्रिया(जीवन) एवं भौतिक–रासायनिक क्रिया(शरीर) का संयुक्त रूप

जीवों में जीवन शरीर के अनुरूप कार्य करने में वंशानुषंगीय विधि से प्रवृत्त, सीमित; केवल संवेदनाएँ प्रमाणित

मानव परंपरा में संज्ञानशीलता(जानना, मानना) और संवेदनशीलता(पहचानना, निर्वाह करना) दोनों प्रमाणित और संज्ञानीयता पूर्वक संवेदनाएँ नियंत्रित, संतुलित और प्रयोजनशील; मानव मनाकार को साकार करने वाला और मनःस्वस्थता का आशावादी

सभी अवस्थाओं का आचरण उनके लक्ष्य के अर्थ में; मानवीय आचरण भी मानव लक्ष्य(समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व) के अर्थ में/अस्तित्व, पुष्टि, आशा सहित सुख को प्रमाणित करने के अर्थ में

मानवीय आचरण= मूल्य, चरित्र, नैतिकता; मूल्य– संबंध की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, परस्पर उभय तृप्ति; चरित्र– स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार; नैतिकता– धर्मनीति और राज्यनीति की अपेक्षा और प्रमाण= तन, मन, धन रूपी अर्थ की सदुपयोग, सुरक्षा

जीवन लक्ष्य और मानव लक्ष्य सार्थक होना ही अध्ययन, अध्यापन की सार्वभौमता; लक्ष्य द्वय के सार्थक होने के लिए शिक्षा–संस्कार आवश्यक; समझ के रूप में सूत्र, प्रमाण के रूप में व्याख्या; नियति विधि= सह–अस्तित्व, विकास–क्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति= क्रियात्रय

शिक्षा की संपूर्ण वस्तु=क्रिया त्रय; समझने के लिए अध्ययन; समझ= जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना

हर इकाई स्वयं में व्यवस्था रहते हुए, अपने–अपने निश्चित आचरण को व्यक्त करता है; मानव संचेतनापूर्वक मानव में अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करने की प्रवृत्ति; पदार्थ रूप प्रधान, वनस्पतियाँ गुण प्रधान, जीव–जाति स्वभाव प्रधान, मानव धर्म प्रधान आचरण

मानव धर्म अपने में सुख के आधार पर समाधान प्रमाणित होना आवश्यक; सर्वतोमुखी समाधानपूर्ण शिक्षा–संस्कार ही इसके लिए परंपरा और स्रोत; यही जागृत परंपरा

5 सह.अस्तित्व स्थिर है, विकास ओर जागृति निश्चित है।

शुभ का दृष्टा, कर्ता, भोक्ता– जागृत मानव

ज्ञान, विवेक, विज्ञान का धारक–वाहक– जागृत मानव

सह.अस्तित्व वादी दर्शन, ज्ञान, विवेक, विज्ञान पूर्वक ही मानव ही व्यवस्था सहज रूप में जीते हुए समग्र व्यवस्था में भागीदारी

ज्ञान, विज्ञान= सह.अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, चैतन्य प्रकृति रूपी जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण रूपी क्रिया व्यवहार ज्ञान; समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने का ज्ञान

अस्तित्व= व्यापक में संपृक्त प्रकृति

प्रकृति= 4 अवस्था, 4 पद

निश्चित आचरण= स्वभाव गति

मानव स्थिरता,निश्चयता को समझने के उपरांत ही निश्चयता, स्थिरता के लिए ईमानदार हो पाता है, जिम्मेदार हो पाता है; फलस्वरूप भागीदारी पूर्वक प्रमाणित; अतः मानव के लिए समझदारी आवश्यक

6 अनुभव और जागृति की स्थिरता और निश्चयता

मानव को स्थिरता और निश्चयता ही स्वीकृत

अध्ययन करने वाला एवं अध्ययन के उपरांत प्रमाणित रूप में जीने वाला भी मानव ही

जीवन में 5 स्थिति क्रिया= बल= आस्वादन(मन), तुलन(वृत्ति), चिंतन(चित्त), बोध(बुद्धि), अनुभव(आत्मा)

जीवन में 5 गति क्रिया= शक्ति= चयन(आशा), विश्लेषण(विचार), चित्रण(इच्छा), संकल्प (ऋतम्भरा), प्रमाण(प्रामाणिकता)

संपूर्ण प्रमाण सह–अस्तित्व रूपी अस्तित्व में अनुभव का ही प्रकाश

स्थिति क्रियाएँ अनुभवगामी और अनुभवमूलक से अभिव्यक्त होना और अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित होना सार्थक

जीवन तृप्ति का प्रमाण– अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदार होना

प्रयोजन रूपी व्यवस्था ही मानव परंपरा की सर्वोच्च उपलब्धि

मानव परंपरा जागृत होने से स्थिरता, अस्तित्व सहज विधि से (सह–अस्तित्व रूपी अस्तित्व विधि से) प्रमाणित; निश्चयता मानवीयपूर्ण आचरण विधि से प्रमाणित

राज्य= वैभव= परिवार व्यवस्था, विश्व परिवार व्यवस्था= स्वराज्य

सार्वभौम व्यवस्था= समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व पूर्वक रहना

7 ऊष्मा और धरती का संतुलन

भौतिक संसार/खनिज– ठोस, विरल

रसायन संसार – ठोस, तरल, विरल

ऊष्मापूर्वक ठोस से तरल से विरल

जड़ प्रकृति– पहचानना, निर्वाह करना; चैतन्य प्रकृति– जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना

ताप प्रकटन के मूल में– एक जलने वाली वस्तु, एक जलानेवाली वस्तु का संयोग

ऊष्मा= जलने का प्रभाव; हर आवेशित वस्तु द्वारा परस्परता में ऊष्मा/ताप का परावर्तन; अंततोगत्वा स्वभाव गति

विस्फोटक द्रव्यों के संयोजन और दवाब विधि से भी तापोद्दीपन

ताप संयोजन, नियंत्रण विधि से मानव आवश्यक प्रयोजनों को सिद्ध करता है।

धरती की घूर्णन गति के नर्तन के समान में होने वाली कंपनात्मक गति ही सूर्य के चारों ओर वर्तुलात्मक गति में प्रमाणित होने का स्वरूप

घूर्णन गति के फलस्वरूप दिन और रात; फलतः अधिकतम और न्यूनतम तापमान

धरती का गतिपथ अंडाकार; फलतः ऋतु–परिवर्तन; जो विकासक्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति हेतु आवश्यक

ऊर्जा संपन्नता, बल संपन्नता, क्रियाशीलता के साथ–साथ विकासक्रम और विकास की प्रवृत्तियाँ समाई

आवेश– स्वभाव गति– विकासक्रम– विकास– जागृति क्रम– जागृति– जागृति की निरंतरता

जीवन के एक धरती से दूसरे धरती पर पहुँचने की संभावना समीचीन

कोयला, खनिज तेल ब्रह्माण्डीय ऊष्मा को पचाकर धरती पर ऊष्मा संतुलित रखने के लिए आवश्यक; ये सभी धरती के अंदर; कार्बन मोनो ऑक्साइड को पचाकर धरती द्वारा कोयले का निर्माण

धरती की कंपनात्मक गति के समान रूप में संपूर्ण खनिज में कंपन, स्पंदन; उससे अधिक रासायनिक द्रव्यों में स्पंदन; उससे अधिक प्राणवायु में स्पंदन; फलस्वरूप रचनाएँ इस धरती पर प्रकट

मानव प्रयोजन– समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

मानव के व्यवस्थित होने के मूल में ज्ञान, विवेक, विज्ञान का संगीतमय क्रियाकलाप

प्राण अवस्था अपने तापमान को विपरीत वातावरण में भी बनाकर रख पाने में सक्षम

धरती भी कोयला, खनिज तेल के सहयोग से ताप पाचन में समर्थ इकाई; इनके प्रयोग से और विकिरणीय धातुओं के प्रयोग से धरती तप्त होने पर प्राण–अवस्था नष्ट; उत्तरी–दक्षिणी ध्रुव के बर्फ का पिघलना; दोनों ध्रुवों के मध्य चुंबकीय धारा का विचलित होना; पानी का विघटित होना

उपचार– इनके उपयोग को रोकना, ईंधन का विकल्प सुनिश्चित करना

विकल्प– प्रवाह बल, हवा, समुद्री तरंग, गोबर गैस, प्राकृतिक गैस, तैलीय वृक्ष(वनस्पति तेल), सौर ऊर्जा

धरती के ऊपरी सतह में विशाल संभावना

पाताली जलस्रोत के प्रयोग के बदले धरती की ऊपरी सतह पर जल संचय बेहतर

4 अवस्थाएँ, खगोलीय प्रकाश धरती की ऊपरी सतह पर

सर्वशुभ= नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व को प्रमाणित करना

सार्वभौमता= शुभ का सूत्र,व्याख्या; अखंडता= सूत्र, सार्वभौमता=व्याख्या;

धारक–वाहक– मानव

अनुचित, अनावश्यक, अनर्थ प्रवृत्ति, कार्य–व्यवहार, विन्यास भ्रमवश; इन्हें सुधार लेना ही मानव का सम्मान, सौभाग्य

8 स्थिति–गति

स्थिति और गति अविभाज्य; 'होना', 'गतित रहना' इसका मूल प्रमाण; एक परमाणु भी होने के आधार पर गतित

स्थिति में बल, गति में शक्ति

जागृत मानव जीवन की स्थिति–गति= 5 स्थिति क्रिया; उसे प्रमाणित करने हेतु 5 गति क्रिया

ऐसा प्रमाणपूर्वक जीने के लिए शिक्षा, शिक्षणपूर्वक ज्ञान, विवेक, विज्ञान अर्जन आवश्यक; यही सह–अस्तित्ववादी शिक्षाक्रम

संपूर्ण स्थितियाँ सार्वभौमिक और अखण्ड समाज संबंध के रूप में स्पष्ट; इन सभी सोपानों में भागीदारी करना ही प्रमाण का तात्पर्य

अनुभव प्रमाण सार्वभौम

विज्ञान की समस्या– अंतिम सत्य; मूल मात्रा, ऊर्जा स्रोत, लक्ष्य का पता नहीं

हर मानव जिम्मेदारी, न्याय, समाधान का पक्षधर; जबकि विज्ञान में यंत्र प्रमाण

विज्ञान संघर्ष हेतु प्रतिबद्ध; मनुष्येतर प्रकृति मानव के उपयोग के लिए, ऐसी मान्यता

सह–अस्तित्ववादी विधि से, अनुभवमूलक विधि से हर नर–नारी समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और भागीदारी के रूप में मानवीय–आचरण पूर्वक सर्वतोमुखी समाधान प्रमाणित

उपकार= समझा हुआ को समझाना, किये हुए को कराना, सीखे हुए को सिखाना

सह–अस्तित्व रूपी अस्तित्व नित्य वर्तमान और व्यक्त

समझे हुए को समझा पाना, प्रमाणित कर पाना ही व्यक्त होने का प्रमाण; जो हम समझा मानते है, समझा नहीं पाते, यही अव्यक्त

9 मात्रा

मात्रा= वस्तु= वास्तविकता को व्यक्त करना= रूप, गुण, स्वभाव, धर्म का अविभाज्य वर्तमान

परमाणु ही मूल मात्रा

इकाई– स्वयं में व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदार

अव्यवस्थित इकाईयों में भी व्यवस्था में भागीदारी की प्रवृत्ति– परमाणु अंश, भ्रमित मानव

पहचानने के अनंतर व्यवस्था में जीने के अर्थ में निर्वाह करना

मानवीय लक्ष्य रूपी मानवत्व को प्रमाणित करने के क्रम में मानवीयतापूर्ण आचरण

आचरण के आधार पर इकाई की पहचान

मानवत्व का एक ध्रुव मानव अपने आवश्यकता(समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व) ही है, जो व्यवहार, उत्पादन–कार्य, व्यवस्था में भागीदारी(मूल्य, चरित्र, नैतिकता रूपी मानवीय आचरण) करने के रूप में प्रमाणित

सर्वमानव में किसी आयु में सर्वमानव के शुभ की चाहना

समझदार होना और समझदारी परंपरा को बनाए रखना= मानव की स्थिति–गति

गति में आचरण, स्थिति में फलन बना रहना ही यथास्थिति का स्वरूप

प्रौद्योगिकी शेष प्रकृति को पहचानने से सफल; मनःस्वस्थता प्रमाणित होने के लिए मानव को पहचानना आवश्यक

मानव की पहचान– समाधान, समृद्धि पूर्वक जीता हुआ न्याय को प्रमाणित करना

न्याय= संबंध की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति

मानव प्रयोजन– आचरण में सुदृढ़ता, आचरण का व्यवस्था में प्रमाण, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी

शेष प्रकृति के निश्चित आचरण के फलस्वरूप मानव द्वारा मनाकार को साकार करना; अतः शेष प्रकृति मानव के लिए सार्थक, पूरक

मनव मनःस्वस्थता पूर्वक शेष प्रकृति के लिए सार्थक, पूरक

मानव मानव के साथ पूरक हुए बिना अन्य प्रकृति के साथ पूरक होना बनता ही नहीं

विज्ञान का प्रयोजन मानव लक्ष्य सार्थक होने के लिए दिशा निर्धारित करना

विज्ञान विवेक के अर्थ में; विवेक और विज्ञान ज्ञान के अर्थ में; ज्ञान, विवेक, विज्ञान सह–अस्तित्व के अर्थ में सार्थक

हर इकाई का निश्चित गठनपूर्वक आकार(परिणाम)

आकार– बनावट, आयतन– फैलाव

हर इकाई हर इकाई पर प्रतिबिम्बित; हर इकाई प्रकाशमान

हर इकाई में श्रम, गति, परिणाम रूपी क्रिया; गति के फलन में शब्द, ऊष्मा, विद्युत, तरंग

हर जीव और मानव में आवश्यकतानुसार 5 इंद्रियों की बनावट; हर इंद्रिय से कुछ न कुछ सूचना

हर मात्रा में रूप विविधता आकार, आयतन के रूप में; गुण विविधता गति, कार्य, प्रवृत्ति के रूप में; स्वभाव विविधता, धर्म विविधता

समाधान ही सुख का प्रमाणस्वरूप

सह–अस्तित्व में अनुभवमूलक विधि से ही सर्वतोमुखी समाधान व्यक्त

जीव संसार के लिए प्राणावस्था उपयोगी और जीवावस्था प्राणावस्था के लिए पूरक

मानव शरीर रचना विविध भौगोलिक परिवेश में विविध जीव शरीर से निष्पन्न; फलतः अनेक नस्ल, रंग

मानव–शरीर सप्त धातु संपन्न और समृद्धिपूर्ण मेधस युक्त रचना

पदार्थ अवस्था का स्वभाव– संगठन–विघटन

प्राण अवस्था का स्वभाव– सारकता–मारकता

सारकता– स्वयं में विपुल होना, जीव संसार के लिए उपयोगी

मारकता– बीज व्यवस्था को विपुल बनाने में अड़चन, जीव संसार के लिए रोग,मृत्यु कारक

जीव अवस्था का स्वभाव– क्रूर–अक्रूर/मांसाहारी–शाकाहारी/हिंसक–अहिंसक

किसी जीव की हत्या न करना, मांस भक्षण न करना, वनस्पति–आहारों पर जीते रहना

ज्ञान अवस्था का स्वभाव– धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा

धीरता– न्याय के प्रति सुस्पष्ट और प्रमाणित होना

वीरता– स्वयं न्याय के प्रति निष्ठान्वित,व्यवहारान्वित, प्रमाणित रहते हुए लोगों को न्याय सुलभता के लिए अपने मन, तन, धन को अर्पित, समर्पित करना

उदारता– तन, मन, धन रूपी अर्थ को उपयोगिता(शरीर पोषण, संरक्षण और समाज गति में प्रयोग) विधि से, सदुपयोगिता(अखण्ड समाज में भागीदारी करते हुए वस्तुओं का अर्पण–समर्पण) विधि से, प्रयोजनीयता(स्वयं स्फूर्त स्वायत्त विधि से सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी) विधि से उपयोग करना

दया– पात्रता के अनुरूप वस्तु को उपलब्ध कराना

कृपा– वस्तु के अनुरूप पात्रता को उपलब्ध कराना

करूणा– वस्तु और पात्रता दोनों को स्थापित करने की क्रिया

10 गुण– सम, विषम, मध्यस्थ

सम– सृजनकारी संयोजन क्रियाकलाप

विषम– विघटन, विध्वंसकारी क्रियाकलाप और प्रवृत्ति

मध्यस्थ– जिस योग–संयोग विधि से जितनी भी रचनाएँ बनती हैं, उसको बनाए रखने में किया गया प्रवृत्ति और कार्य

हर इकाई का निश्चित आवश्यकता त्व के रूप में स्पष्ट; प्रवर्तन के आधार पर ही आवश्यकता स्पष्ट

हर यथा–स्थिति, अवस्था और पद सोपानवत् एक से एक जुड़ी हुई

सिंधु–बिंदु न्यायपूर्वक अध्ययनविधि सार्थक

सर्वशुभ के साथ ही मानव का स्व–वैभव; भ्रमवश इससे अनभिज्ञ

जागृत मानव का गुण– मध्यस्थ – अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था, मानवीय परंपरा को बनाए रखना

मानव= सह–अस्तित्व में संपूर्ण पद, अवस्था में स्थित जड़–चैतन्य प्रकृति को जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना

मानव में अखंडता, सार्वभौमिकता; जीवों में सामुदायिकता; वनस्पति में जातियता, प्रजातियता; पदार्थावस्था में विकासक्रम गत अंशों के संख्या भेद से अनेक यथास्थितिपूर्वक प्रमाणित

अस्तित्व में विविधता होते हुए भी राशि विधि उन अवस्था और पद भेद से मानव कुल पहचानने की व्यवस्था, सह–अस्तित्व सूत्र व्याख्या से अध्ययनगम्य है।

11 बल–शक्ति (स्थिति–गति)

विज्ञान विधा से दवाब बल के रूप में; गति, तरंग, प्रवाह शक्ति के रूप में

भार धरती के साथ सह–अस्तित्व को प्रमाणित करने के क्रम में होने वाला विन्यास, सिद्धांत

नियंत्रणवश परमाणु में अंशों के बीच निश्चित अच्छी दूरी

ठोस–ठोस के साथ, तरल–तरल के साथ, विरल–विरल के साथ सह–अस्तित्व को प्रमाणित करते हैं।

प्रत्येक एक अपने वातावरण सहित संपूर्ण; प्रत्येक एक अपने त्व सहित व्यवस्था

ठोस का ठोस के साथ सह–अस्तित्व को प्रमाणित करने का विन्यास= गुरूत्वाकर्षण

विन्यास– सह–अस्तित्व को प्रमाणित करने के क्रम में क्रिया

सापेक्षता में छोटे–बड़े का बोध; संपूर्णता ओझिल

स्थिति–गति = दवाब और प्रवाह का संयुक्त रूप; चुबकीयता दवाब के रूप में, विद्युत तरंग प्रवाह के रूप में

एक बल, दूसरे प्रकार के बल और प्रवाह का कारक

स्थिति में बल संपन्नता का मतलब स्वयं में व्यवस्था होना

गति में शक्ति संपन्नता का मतलब समग्र व्यवस्था में भागीदारी

अणु बंधन, भार बंधन वश ही छोटी रचनाएँ, बड़ी रचना के रूप में रचित

समाधान संपन्नता ही समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व को प्रमाणित करने में योग्य/सफल

प्राण– गति– गति में प्रेरणा होना; वातावरण/प्रभाव क्षेत्र में व्यवस्था प्रमाणित होना

त्राण– स्थिति– स्थिति में स्वयं व्यवस्था होना

हर इकाई परस्परता में निश्चित दूरी में रहते हुए अपने–अपने मौलिकता को बनाए रखने में सफल; यही नियंत्रण

क्रिया= श्रम, गति, परिणाम

श्रम= यथास्थिति का वैभव

गति= अपने में प्रभाव को फैलाने का वैभव

परिणाम= भिन्न यथास्थिति का वैभव– मात्रात्मक, गुणात्मक– ध्रुव, दीर्घ– यथास्थिति की स्थिरता, अस्थिरता के अर्थ में

समझ= सह–अस्तित्व सहज स्वीकृति; समझ की परिपूर्णता ही मनःस्वस्थता का स्वरूप; मनःस्वस्थतापूर्वक ही सदुपयोग

व्यापक और अनंत के बारे में जानने, मानने के आधार पर किसी एकदेशीय अध्ययन से, एक इकाई के अध्ययन से ऐसे सभी इकाइयों के रूप, गुण, स्वभाव, धर्म के प्रति आश्वस्त होना स्पष्ट

(माप, तौल) परीक्षण का कार्य आवश्यकतानुसार

हर इकाई अपने स्थिति–गति सहित वर्तमान, वर्तमान= वर्तते रहना= क्रियाशील रहना= आचरण स्पष्ट रहना= त्व सहित व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी

धरती– सौर व्यूह– आकाशगंगा– ब्रह्मांड

12 परावर्तन–प्रत्यावर्तन

गम्यस्थली के अर्थ में समस्त क्रियाकलाप संपन्न; स्थिति के बिना गति होती नहीं

प्रत्यावर्तन विधि से समझना, परावर्तन विधि से समझाना; परावर्तन= समझाना, सिखाना, कराना; अनुमोदन

कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित क्रियाओं के मूल में परावर्तन, परावर्तन के मूल में प्रत्यावर्तन

परावर्तन क्रम, कार्य, व्यवहार, फल प्रयोजन संगत होना आवश्यक

कार्य में उत्पादन का आधार, व्यवहार में न्याय का आधार, फलन में मानवाकांक्षा का आधार, प्रयोजन में जीवन लक्ष्य के आधार पर सार्थक

उत्पादन, न्याय, मानवाकांक्षा, जीवनाकांक्षा की स्वीकृति हर मानव में सहज

परावर्तन= कृत, कारित, अनुमोदित विधि से व्यक्त होना; ज्ञान, विवेक, विज्ञान ही मानव का मूलस्वरूप, यही परावर्तित

आशय– सुखी होना, लक्ष्य– समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व; अपेक्षा– सार्वभौमता, अखण्डता

अनुभवगामी विधि से अध्ययन, शोध, परीक्षण, निरीक्षण पूर्वक अनुभव और परावर्तन में अनुभवमूलक प्रणाली से मानवाकांक्षाएँ प्रमाणित

स्वत्व= ज्ञान, विवेक, विज्ञान; हर प्रत्यावर्तन अनुभव सूत्र और परावर्तन अनुभव सूत्र की व्याख्या

मानव के स्वरूप का प्रमाण प्रत्यावर्तन में ज्ञान, विज्ञान, विवेक के रूप में; परावर्तन में कार्य, व्यवहार, व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित

परावर्तन विधि से अध्यापन; प्रत्यावर्तन विधि से अध्ययन

मानव जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में; मानव परंपरा के लिए शरीर एक प्रधान आधार

जीवंततापूर्वक ही शरीर पोषण, संरक्षण संपन्न

जानने से कम चाहना, चाहने से कम करना, करने से कम भोगना; भोग की सीमा शरीर ही

शरीर, पोषण, संरक्षण, समाज गति हेतु वस्तुओं का नियोजन

परिवार में आवश्यकता से अधिक उत्पादन पूर्वक समृद्धि

शरीर, परिवार की आवश्यकता सीमित; जीवन शक्तियाँ अक्षय और मानव शरीर के माध्यम से उत्पादन करने में समर्थ

परिवार की सीमा में उपयोग, समाज के अर्थ में सदुपयोग और सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में प्रयोजनशील

समाज गति= अखण्ड समाज और सार्वभौम व्यवस्था का संयुक्त गति

सौंदर्य= व्यक्तित्व= समझदारी के अनुरूप आहार, विहार, व्यवहार

व्यवहार सेवन से संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति सहित संबंधों का सेवन होता है। ऐसे सेवन में सेव्यता और सेवकीयता दोनों समाया रहता है। सेव्य, सेवा विद्या से संपूर्ण संबंध, प्रयोजनों के अर्थ में निर्वाह किया जाना बनता है। फलस्वरूप प्रयोजन का सेवन होता ही है।

हर मानव में समझदारी की संभावना, उपलब्धि की समीचीनता समान

परावर्तन और प्रत्यावर्तन का प्रयोजन– अध्ययन, अध्यापन, मूल्य, मूल्यांकन, समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व के रूप में प्रमाणित होना

13 दवाब, प्रवाह, तरंग, विद्युत चुंबकीय बल

दवाब– सम, विषम आवेश के लिए प्राप्त विवशताएँ; प्रवाह– रस द्रव्य का ढाल की ओर गति

तरंग– ठोस में कंपनात्मक गति; तरल में बाह्य वस्तु के संयोग से उत्पन्न प्रतिक्रिया; विरल में शब्द, विद्युत, किरण, विकिरण के रूप में तरंग

विद्युत तरंग– चुंबकीय धारा के विखंडन से उत्पन्न प्रवाह; संपूर्ण प्रकृति विद्युतग्राही; कम या अधिक होना दवाब, प्रवाह, मात्रा विधि से तय;

चंबकीय धारा जिन छोटे–छोटे रूप में विखंडित हो पाते हैं, वे टुकड़े किसी माध्यम से संप्रेषित होते हैं/दौड़ते हैं

ध्वनि तरंग– एक से अधिक वस्तुओं के संघर्ष से, एक में होने वाली स्वयं–स्फूर्त क्रिया; अर्थ को इंगित करने वाले शब्द तरंग= भाषा तरंग; शब्द और ध्वनि को विद्युतवाहिता पूर्वक प्रसारित करना– रेडियो, टेलीविजन तरंग

शब्द का सार्थक होना आवश्यकता; सार्थकता= समझदार होना, व्यवहार में जीना, मानवाकांक्षा, जीवनाकांक्षा प्रमाणित होना

अणुओं में संकोचन प्रसारण–विधि से विद्युत प्रवाह; संकोचन विधि से दवाब और प्रसारण विधि से प्रवाह; विद्युत प्रवाह का माध्यम होने की स्थिति में संकोचन प्रसारण का बढ़ जाना

धरती के संतुलित ताप को वरीय बिंदु के रूप में देखने पर विद्युत ऊर्जा की उपलब्धि प्रदूषण मुक्त विधि से संभव; ऋतु संतुलन की सटीकता नदियों में जल प्रवाह बल का स्रोत; वनस्पति तेल और सौर ऊर्जा का प्रयोग आवर्तनशील विधि से; बैट्री विधि से ऊर्जा का संचयन

व्यापक में इकाई के भींगे रहने के आधार पर ऊर्जा संपन्नता, बल संपन्नता, चुंबकीय बल संपन्नता के रूप में प्रत्येक इकाई में विद्यमान; इसके प्रमाण में हर प्रजाति के परमाणु और अणु बंधन, भार, बल संपन्न

धरती के अंगभूत द्रव्य के रूप में चुंबकीय द्रव्य; इसके परस्पर यांत्रिकतावश चुंबकीय प्रभाव और विखण्डन दवाब के साथ इन अणुओं का परमाणु में विघटित होने अथवा परमाणु विघटित होकर परमाणु अंश के रूप में दौड़ लगाने की भी संभावना बनी रहती है।(विद्युत प्रवाह के साथ); बैट्री– सेल वाली, प्लेट वाली

मानव विद्युत प्रवाह की निष्पत्ति, उसका नियंत्रण एवं कार्य विधियों में पारंगत

14 देश, दिशा, दूरी, विस्तार, आयाम, कोण

धरती पर दो ध्रवों/शंकुओं को स्थापित कर इन दोनों के मिलन बिंदु के रूप में सूरज, चाँद,तारे को लक्ष्य बनाकर इन दोनों के विभिन्न कोणों के आधार पर, इन दोनों के मिलन बिंदु के आधार पर दूरी का पता लगाते हैं– अज्ञात दूरी को ज्ञात करना

दूसरी विधि– ज्ञात दूरी को ज्ञात करना; ऐसी घटना किसी रचना पर ही

दूरी के रूप में परस्परता में व्यापक वस्तु को ही मापते हैं।

मापदंड अंततः किसी वस्तु का अथवा गति, दवाब, तरंग, शब्दों का सूक्ष्मतम, स्थूलतम गति, दवाब को चढ़ाने, घटाने के रूप में पहचानने की विधियाँ; ज्यादातर दूरसंचार हेतु अनुकूल

विस्तार– रचना की अवधि, रचना/इकाई जितने दूर में फैली है

इस धरती का निश्चित विस्तार; परस्पर विश्वासपूर्वक इस धरती पर स्वायत्त मानव के रूप में जीना ही मुख्य उपलब्धि, धरती के ऊपरी सतह पर पर्याप्त ऐश्वर्य; इनमें वन सर्वप्रमुख, इन सबको बनाए रखने हेतु ऋतु संतुलन अनिवार्य

अन्य धरतियों को पहचानना प्रौद्योगिकी विधि से गति और प्रयास के अनुपात में संभव

देश– किसी भी रचना का विस्तार ही देश– अविभाजित, अविखंडित; भ्रमित विधि से धरती पर अनेक देश, राज्य

इस धरती पर हर वनस्पति, जीव, मानव एक रचना

धरती विकासक्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति को प्रमाणित करने में तत्पर

दिशा और दृष्टि

दिशा– पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण; सह–अस्तित्व में पूरकता, उपयोगिता विधि; सह–अस्तित्व के अर्थ में ही दिशा निर्धारित; दिशा को पहचानने के लिए एक ध्रुव बिन्दु आवश्यक; केंद्र से कुछ दूरी पर दो अंशों को सरल रेखा से जोड़ने पर कोण; प्रत्येक एक अनन्त कोण संपन्न

45^0– 8 दिशा; 90^0– 4 दिशा; 180^0– 2 दिशा; सूरज के 90/180 अंश पर दिशा निर्धारित

90^0 दिशा को पहचानने वाले के आधार पर, 180^0 दिखने के आधार पर

मानव दृष्टिपात– 90^0, केंद्र– दोनों चक्षुओं के स्नायु जुड़ने वाली जगह पर, मेधस तंत्र में स्थापित

जीवन की उपस्थिति में ही दिशा, काल का बोध; यंत्र, पुस्तक प्रमाण के मूल में मानव ही प्रमाण

दिशा, देश को पहचानने के लिए दृष्टि संपन्नता आवश्यक; दिशा निर्धारण होने के आधार पर कार्य निर्धारण; दृष्टि के साथ दिशा निर्धारण; दृष्टिपूर्वक ही लक्ष्य, दिशा निर्धारण

दृष्टि मानव में सह–अस्तित्व विधि से ही सभी आयाम, कोण, परिप्रेक्ष्यों में सार्थक

कोण– दो ध्रुवों को पहचानकर रेखा, 3 ध्रुवों को पहचानकर कोण; समकेंद्रीय रेखाओं के आधार पर ही अंश, कोण की पहचान; केंद्र से दूरी बढ़ने पर परस्पर रेखाओं के बीच की दूरी बढ़ती है।

आयाम– एक वस्तु 6 ओर से सीमित होते हुए 3 आयाम; वस्तु के 6 ओर मानव आँख में प्रतिबिम्बित होने के लिए वस्तु को कम–से–कम 3 प्रकार/ओर से देखने की आवश्यकता

वस्तुएँ अपने संपूर्ण आकार/आयतन का 180 अंश तक मानव चक्षु पर प्रतिबिम्बित

गणित आँख से अधिक; गणितीय भाषा से आकार, आयतन का पूरा बोध; आँख में धन का कोई प्रतिबिंबन नहीं; गणितीय विधि से अधिक गुणात्मक और कारणात्मक भाषा

हर दिशा, कोण, आयाम में संपूर्णता के आधार पर लिए गए निर्णयों के साथ समाधान निर्गमित

ज्ञान, विज्ञान, विवेक संयुक्त विधि से सह–अस्तित्ववादी नजरिया से संपूर्ण को पहचानना कारण, गुण, गणितात्मक भाषा से संप्रेषित हो पाना, बोध हो पाना, फलस्वरूप मानवाकांक्षा, जीवनाकांक्षा रूपी लक्ष्य को पाना ही एक मात्र आवश्यक

दिशा– भौगोलिक, खगोलीय, विकास की दिशा, जागृति की दिशा

विकास की दिशा– मनुष्येतर प्रकृति के साथ पूरकता, उपयोगिता विधि से अपने कार्य–व्यवहार को निर्णीत करना, आचरण में लाना, फल–परिणाम को पाना

जागृति की दिशा– समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी पूर्वक मानव में संगीत को, सामरस्यता को प्रमाणित करना, आकांक्षाद्वय को प्रमाणित करना। इसके लिए सह–अस्तित्ववादी नजरिया ही नित्य समाधान

रूप, गुण, स्वभाव, धर्म रूपी आयामों को स्पष्टता से हृदयंगम करने के उपरांत ही हर मानव विकास और जागृति के संदर्भ में समाधानात्मक निर्णय संपन्न होना; फलस्वरूप जागृति और विकास की दिशा में सार्थक हो पाना संभव

15 काल

काल– क्रिया की अवधि; क्रिया अपने में निरंतर संपन्न, कुछ क्रियाएँ आवर्तित

क्रिया के एक आवर्तन के आधार पर काल की पहचान; इनका आवश्यकतानुसार विभाजन

क्रिया के रूप में काल अपने में होने और क्रिया के रूप में निरंतर, शाश्वत

काल नित्य वर्तमान; वर्तमान वस्तु के रूप सह–अस्तित्व

कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रतावश काल का विभाजन और भूत, भविष्य की पहचान

अस्तित्व नित्य वर्तमान; विकास और जागृति को प्रमाणित करने वाला– मानव

वर्तमान में ही मानव के आचरण, व्यवहार, ज्ञान, विवेक, विज्ञान की पहचान

16 प्राणावस्था, मानव शरीर और जीवन के संयुक्त रूप में मानव

प्राणावस्था के मूल में यौगिक विधि, प्रवृत्ति स्वयंस्फूर्त; ब्रह्मांडीय किरण और अनेक प्रजाति के परमाणु ही इसके लिए अनुकूल परिस्थिति

किरण, विकिरण, ऊष्मा के संयोग से ही संपूर्ण यौगिक क्रिया; पानी– अम्ल, क्षार

रसायन द्रव्यों के योग–संयोग से, विकिरणीय किरण और ऊष्मा संयोगपूर्वक पुष्टि तत्व, रचना तत्व का निर्माण; पुष्टितत्व, रचना तत्व के योगफल में प्राणसूत्रों की निर्मिति, प्रस्तुति, कार्यशीलता; यही ऊष्मा संयोग, विकिरणीय संयोग से कंपनवश, प्राणसूत्रों में रचना विधि की स्वीकृति

एक प्रकार की रचना अपने में समृद्ध होने के उपरांत, दूसरे प्रकार की रचना के लिए प्राणसूत्रों में स्वीकृति, फलस्वरूप दूसरे प्रकार की रचनाएँ

विरचित वनस्पतियों का अवशेष ही स्वेदज संसार का आधार– अण्डज संसार(जल, भू, नभचर – सर्वाधिक नभचर)– पिंडज संसार(भूचर अधिक)– मानव शरीर

मानव परंपरा में कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रतावश जीवों से भिन्न कार्य गतिविधियाँ संपन्न; जैसे– फसल उत्पादन, घर बनाना, कपड़ा बनाना

मानव में अभी मुख्य स्वरूप तक में प्रजाति यथावत् रहते हुए प्राणसूत्र, प्राणकोषा, रचना विधि क्रम में श्रेष्ठता; इसमें मानव की प्रवृत्ति का भी योगदान समाया रहना संभावित

शरीर रचना ज्ञान, मूलभूत प्रक्रिया, नाप तौल, रोगों का परीक्षण विधि, दवा संयोजन ये सभी वर्तमान में व्यापार से अनुबंधित

मानव शरीर में रंग, नस्ल में विविधता– विविध रस द्रव्यों की भिन्न–भिन्न आनुपातिक प्रयुक्ति के आधार पर; अंग, अवयव समान

सह–अस्तित्ववादी नजरिये से ज्ञान, विवेक का परंपरा में संचार ही प्रधान मुद्दा

आयुर्वेद/युनानी विधि में– नाड़ी और दोष पर धड़कन और धड़कन के ध्वनि को सुनते हुए शरीर की आवाज को सुनने की कोशिश; उसके आधार पर शरीर के रोग, कष्ट को पहचानने के लिए मानसिकता का नियोजन आवश्यक; यंत्र इसमें सहयोगी, पर यंत्रों के संकेत को मानव अपनी मानसिकता के साथ ही पढ़ता है।

रोग/औषधियों को पहचानना, इनके बलाबल को पहचानना, पथ्य, परहेज, अनुपान को पहचानने का सम्मिलित प्रयोग– कर्माभ्यास

ज्ञान, विवेक, विज्ञान सहित किया गया कर्माभ्यास, स्वास्थ्य संयम विधा में लोकव्यापीकरण करने के पक्ष में; समझदार मानव बहुमुखी उपयोगी; ऐसा मानव अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदार

समझदारी के साथ मानव का स्वास्थ्य संयम विधा में भागीदारी करना एक स्वाभाविक प्रक्रिया; इसके साथ ही शेष चार आयाम में भागीदारी करना सभी समझदार मानव का कर्तव्य और दायित्व; समझदारी के उपरांत कर्तव्य और दायित्व स्वयंस्फूर्त विधि से स्वीकृत और प्रमाणित; ज्ञान, विवेक, विज्ञान का अनुभवपूर्वक विचारपूर्वक निर्णयपूर्वक समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में जीना; जीवन के आधार पर शरीर का संचालन

समझने के अनंतर अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में हर कार्य, व्यवहार, विचार की प्रस्तुति; फलस्वरूप मानवापेक्षा, जीवनापेक्षा सफल

जागृति के उपरांत जीवन का वैभव शरीर के द्वारा मानव परंपरा में प्रमाणित;मानव का अवतरण विभिन्न देश,काल, परिस्थिति के अनुसार भिन्न समृद्ध मेधस संपन्न जीव शरीरों से निष्पन्न

मानव शरीर में समाहित द्रव्य, गुण, रचना विधि, अंग, प्रत्यंग, अवयव यथावत्; मेधसतंत्र द्वारा कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता को 5 संवेदनाओं द्वारा, 5 प्रकार के कर्मेन्द्रिय द्वारा स्पष्ट; मानव मनाकार को साकार करने में सफल–जीवन सहज कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता के आधार पर; इसमें शरीर का योगदान नहीं; शरीर रचना समान रहते हुए उसमें मत, संप्रदाय, भाषा, देश, काल का दखल नहीं; अतः क्लोनिंग विधि असफल; वंश के अनुरूप गुण, संस्कार मानव में नहीं;प्राणकोशाएँ शरीर रचना के रूप में यथावत् दुहराती रहती हैं।

जीवन एक चैतन्य इकाई, अक्षय बल, शक्ति संपन्न, जागृति के स्वरूप में समानता; जीवन और मानव तृप्ति की एकरूपता को पहचानकर सार्थक बनाने की आवश्यकता

कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता, मानसिकता जीवन की महिमा; फलस्वरूप मानव मनाकार को साकार करने में सफल

मनःस्वस्थता= जीवन जागृति= 5 बल+5 शक्ति संपन्नता

मानव की पहचान जीवन की स्थिति–गति के आधार पर सह–अस्तित्ववादी दृष्टिकोण से सुस्पष्ट होने वाली ज्ञान, विज्ञान, विवेक संपन्नतापूर्वक अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी पूर्वक आकांक्षाद्वय सार्थक

17 ज्ञान, ज्ञाता, ज्ञेय

रहस्य के आधार और गम्यस्थली में मतभेद

ज्ञाता– जीवन, ज्ञान– ज्ञानत्रय; ज्ञेय– जागृतिपूर्वक आकांक्षाद्वय को सार्थक बनाना– अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था

द्रष्ट– जीवन, दृश्य – सहअस्तित्वरूपी अस्तित्व, दर्शन– सहअस्तित्व दर्शन

ध्येय– जागृति, ध्यान– समझदारी से संपन्न होने, समझदारी को प्रमाणित करने के क्रम के रूप में, ध्याता– जीवन

कर्ता– जीवन, कार्यपद– मानव, देव, दिव्य मानव पद प्रतिष्ठा, कारण– सहअस्तित्वरूपी अस्तित्व नित्य प्रतिष्ठा

साधक– जीवन, साध्य– जीवन जागृति; परंपरा के रूप में साध्य वस्त–ु मानव आकांक्षा, जीवन आकांक्षा; सह–अस्तित्ववादी विधि से प्रमाणित

जागृति= स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार का स्वरूप ज्ञान, विवेक, विज्ञान, जिसका प्रमाण कार्य व्यवहार पूर्वक अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का स्वरूप

प्रयोजन के अर्थ में संबंध की पहचान और निर्वाह

कर्तव्य– क्या, कैसा करना, इसका सुनिश्चयन होना

दायित्व– क्या, कैसे पाना, इसका सुनिश्चयन और उसमें प्रवृत्ति होना

क्या पाना और पाने के लिए कैसा, क्या करना ये दोनों जुड़े हुए तथ्य

संबंधों की सार्थकता, प्रयोजन और संज्ञानीयतापूर्ण प्रयोजन के अर्थ में पहचान

18 द्रष्टा, कर्ता, भोक्ता

सद्ग्रंथ और सद्वाक्यों में मतभेद; निर्विवाद धर्म का स्वरूप स्पष्ट नहीं

क्रिया स्वयं में श्रम, गति, परिणाम के रूप में कार्य करता हुआ स्पष्ट

सह–अस्तित्व में चारों अवस्थाएँ स्वयंस्फूर्त कर्ता पद में

परिणाम का अमरत्व= गठनपूर्ण परमाणु, श्रम का विश्राम= जागृति, गति का गंतव्य= जागृति पूर्णता

व्यापक में संपृक्त एक–एक वस्तुएँ ऊर्जा संपन्न, बल संपन्न, स्वयंस्फूर्त विधि से क्रियाशील

जीने की आशा– चाहना / न चाहना– जीवावस्था

सुख भोगने की मानसिकता खुद की इच्छा– ज्ञानावस्था

विकास क्रम– कर्तापद, जीवन– भोक्ता पद; सुख भोगने के लिए द्रष्टा पद का उदय होना आवश्यक

द्रष्टा पद प्रतिष्ठा का प्रमाण– समझदारी; ज्ञान तत्व के साथ ज्ञाता के रूप में प्रतिष्ठित

मानव ही द्रष्टा, कर्ता, भोक्ता पद को प्रमाणित करता है।

जीवन द्रष्टा, मानव परंपरा में प्रमाणित करता हुआ कर्ता, भोक्ता

द्रष्टा, ज्ञाता के रूप में कर्ता पद(शेष प्रकृति) का उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता विधि से आकांक्षाद्वय को प्रमाणित करने का सौभाग्य उदित

रासायनित, भौतिक संसार विकासक्रम में यथास्थिति में परिणामशीलता के आधार पर स्पष्ट; इस प्रकार कर्ता के साथ भोक्ता पद बना ही है, क्योंकि परिणाम का स्वरूप अनेक यथास्थिति में दिखाई देता है। चैतन्य संसार में द्रष्टा पद प्रतिष्ठा

शेष प्रकृति और भ्रमित मानव में सदा–सदा कर्ता, भोक्ता होने का गवाही; मानव द्रष्टापूर्वक ही सार्थक, सुफल होने की व्यवस्था

द्रष्टा पद जागृत परंपरा की ही महिमा